जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

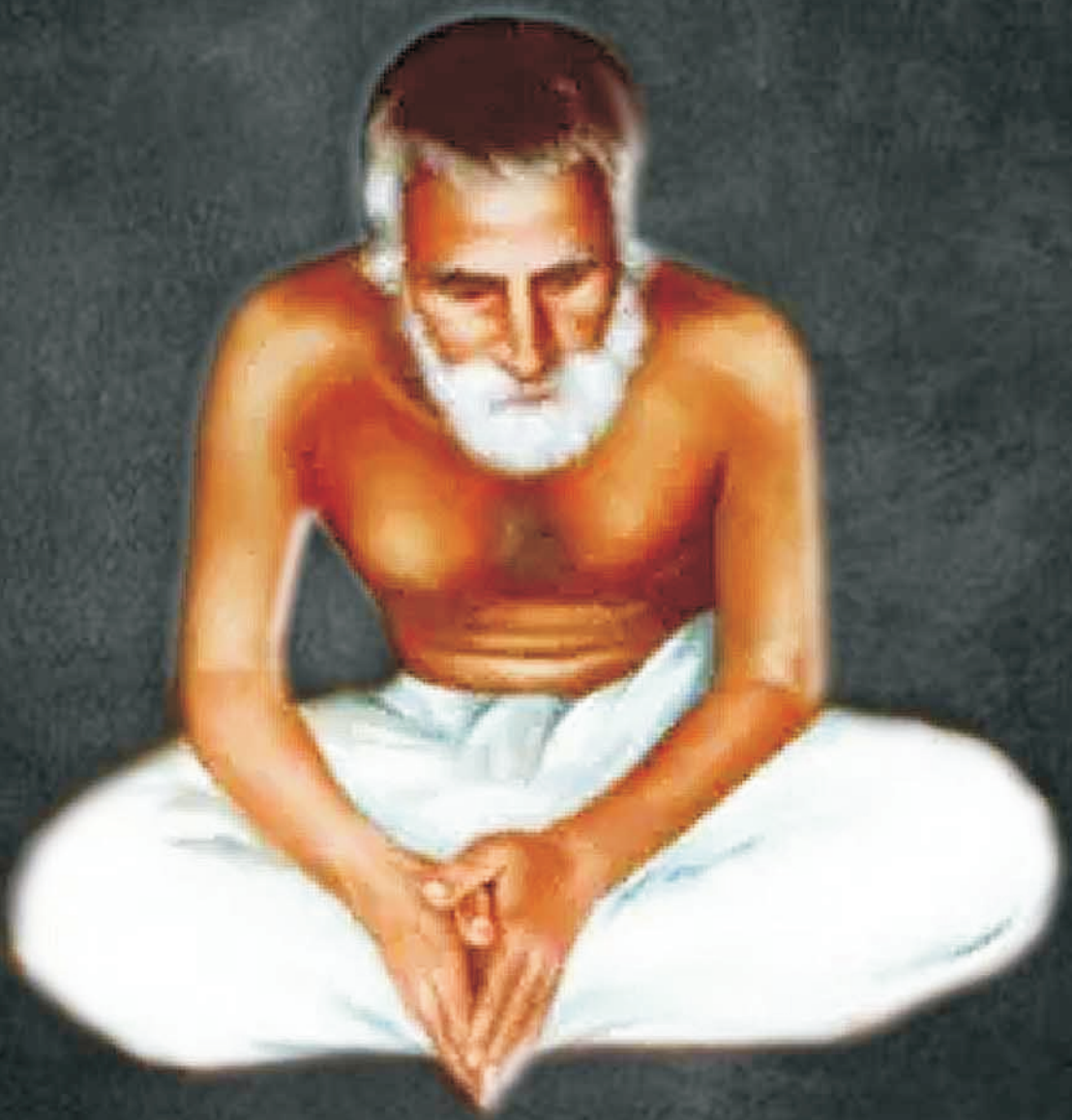

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर

बाबाजी महाराज

और

महाराज मणीन्द्रचन्द्र

एक बार कासिम बाजार के स्वनामधन्य जमींदार Sir मणीन्द्रचन्द्र नन्दी बहादुर ने श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज को ॐ विष्णुपाद श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर के गुरुपादपद्म के रूप के में सर्वश्रेष्ठ वैष्णव जानकर कासिम बाजार के

महल में वैष्णव सम्मेलन में आमंत्रित किया। वैष्णव राजा की सकातर प्रार्थना से आर्द्रचित्त होकर श्रील बाबाजी महाराज जी ने कहा,– 'आप यदि मेरा संग चाहते हैं तो अपनी सारी सम्पत्ति आत्मीय स्वजनों को सौंपकर इस नवद्वीप के गंगातट पर एक झोंपड़ी बनाकर मेरे साथ रहिए। आपको भोजन के लिए बिल्कुल भी चिन्ता नहीं करनी

पड़ेगी, मैं माधुकरी करके आपको खिलाऊँगा। तब आपकी भजनमय कुटिया के प्रांगण में नित्य निमंत्रित होकर मैं बंधन में रहूँगा। लेकिन यदि अब मैं आपका निमंत्रण स्वीकार करके अप्राकृत गौरधाम से आपके इन्द्र के समान भव्य महल में गया तो कुछ दिनों में ही मैं भी आपसे प्रतियोगिता करते हुए बहुत सारी ज़मीन इकट्ठी करने में

जुट जाऊँगा। उसका परिणाम यह होगा कि कृष्ण भजन के बजाय विषय-भजन की स्पृहा मेरे हृदय में उदित होगी एवं उसके फल से क्रमशः मैं अपने आपको एक वैष्णव राजा की हिंसा का पात्र बना लूँगा अर्थात् हम दोनों एक दूसरे के शत्रु बन जाएँगे। इसलिए यदि आपको मेरे साथ नित्य प्रीति रखनी हो, एवं वैष्णव बन्धु– यदि आप, मेरे प्रति किसी प्रकार की कृपा प्रकाशित करने की सच्ची

इच्छा रखते हैं तो विवम्भर के इस अप्राकृत धाम {मायापुर} में वास और माधुकरी द्वारा जीवन निर्वाह कर निरन्तर हरिभजन करना ही कर्त्तव्य है।

श्रीलगुरुदेव